# विपश्यना

[साधकों का मासिक प्रेरणापत्र]

रजि. नं. १९१५६/७१

पोस्टल रजि. नं. (M) NS (C) 36

वर्ष १२ • बम्बई • बुद्धवर्ष २५२६ • मार्गशीर्ष पूर्णिमा [शक] • दि. ३०-१२-१९८२ • अंक ७


## निर्मल धर्म

जब कोई व्यक्ति इस चेतनासे धर्म सिखाता है कि मेरी धर्मवाणी सुनकर लोग प्रसन्न-प्रभावित होंगे। प्रसन्न-प्रभावित होंगे तो मुझे दान-दक्षिणा देंगे। दान-दक्षिणा देंगे तो मेरा परिवार पलेगा, मेरी भौतिक इच्छाएँ पूरी होंगी। दान-दक्षिणा न भी दें तो मान-सम्मान देंगे। मेरे बारेमें प्रशस्ति-प्रशंसाके शब्द कहेंगे। वह प्रशंसा देश-विदेशोंमें फैलेगी। पीढ़ियों तक, सदियों तक चलेगी। इतिहासके पन्नोंमें मैं भी एक प्रसिद्ध व्यक्ति माना जाऊंगा। इस चेतनासे सिखाया हुआ धर्म निर्मल नहीं होता। कल्याणकारी नहीं होता।

परन्तु जब कोई व्यक्ति इस चेतनासे धर्म सिखाता है कि मेरी धर्मवाणी सुनकर लोग प्रसन्न-प्रभावित होंगे। प्रसन्न-प्रभावित होंगे तो धर्म-धारण करनेका समुचित प्रयास करेंगे। समुचित प्रयास करेंगे तो विकार-विमुक्त होंगे, दुःख-विमुक्त होंगे। अपना सही मंगल साधेंगे, स्वस्ति-मुक्ति साधेंगे। इस चेतनासे सिखाया हुआ धर्म निर्मल होता है, कल्याणकारी होता है। बहुजन हित-सुखकारी होता है।

जब कोई भी व्यक्ति सम्यक् सम्बुद्ध बनता है तो उसका निर्मल मानस दुखियारे संसारके प्रति मैत्री और करुणासे ओत-प्रोत हो उठता है। वह केवल लोक-कल्याणके लिए ही शुद्ध धर्म सिखाता है। रोगियोंको रोगकी पीड़ासे मुक्त करनेके लिए शुद्ध धर्म की कल्याणकारी औषधि बांटता है। बदलेमें कुछ पानेके लिए नहीं। वह कोई संप्रदाय स्थापित नहीं करता जिससे कि भावी सहस्राब्दियों तक उसके संप्रदाय-में दीक्षित हुए लोग उसकी जय-जयकार बोलते रहें। उसके नामके मंदिर, देवालय स्थापित करके उसकी कीर्ति अमर बनाए रखें। सत्पुरुषकी कीर्ति तो स्वभावतः अमर हो जाती है। उसे लोगोंको संप्रदायके बाड़ेमें बांधनेकी आवश्यकता नहीं होती। परन्तु कालान्तरमें धर्मका सत्य-सार छूट जानेके कारण लोग बावलेपनमें उसके नाम पर एक ही नहीं, अनेक बाड़े तैयार करते हैं और उनमें स्वयं बंधते हैं, औरोंको बांधते हैं। जो सचमुच संत होता है वह तो लोगोंको संप्रदाय-के बाड़ेसे, जाति और वर्णके बंधनोंसे, नाना प्रकारके मत-मतांतरोंकी बेड़ियोंसे और नाना प्रकारके कर्मकांडोंकी रूढ़ियोंसे मुक्त करता है। वह तो परम परिशुद्ध धर्मचेतनासे परम परिशुद्ध और परम परिपूर्ण धर्म सिखाता है, जिससे लोग शीलवान बनें और सदाचरणका जीवन जिएँ, समाधिवान बनें और अपने मनको वशमें करना सीखें, प्रज्ञावान बनें और राग-विमुक्त, द्वेष-विमुक्त, मोह-विमुक्त होकर सारे दुःखोंसे विमुक्त हो सकें।

विकार ही दुःख हैं। और विकार सार्वजनीन हैं। जिसका मन सुरक्षित नहीं, जो अपने मनका मालिक नहीं, उसमें विकार जागेंगे ही। उसे व्याकुल बनायेंगे ही। यह कुदरतका अटूट नियम है, विश्वका अविचल विधान है, ऋत है, धर्म है जो किसी का पक्षपात नहीं करता। किसीका लिहाज नहीं करता।

किसी संप्रदाय-विशेषमें दीक्षित हो जाने मात्रसे अथवा किसी जाति-विशेष, वर्ण-विशेषमें जन्म ले लेने मात्रसे यदि हमारे मनमें विकार जागने बंद हो जांय और परिणामतः हमारे सारे दुःख दूर हो जांय तो सचमुच उस संप्रदाय, जाति व वर्ण-विशेषको अधिक से अधिक महत्व देना ही चाहिए। परन्तु ऐसा तो नहीं होता न ? कोई अपनेको बौद्ध कहे, हिन्दू कहे, जैन कहे, मुस्लिम कहे, ईसाई कहे अथवा सिक्ख कहे तो भी मन वशमें न हो तो विकारोंसे विकृत होकर दुःखी होता ही है। कोई अपनेको ब्राह्मण कहे, क्षत्रिय कहे, वैश्य कहे, शूद्र कहे तो भी; भारतीय कहे, बर्मी कहे, अँग्रेज कहे, अमेरिकन कहे, रूसी कहे अथवा चीनी कहे तो भी विकारों से विकृत होकर दुःखी होता ही है। कोई अपनेको त्रैतवादी कहे, द्वैतवादी कहे, अद्वैतवादी कहे, अद्वयवादी कहे, विशिष्टाद्वैतवादी कहे, द्वैताद्वैतवादी कहे, आत्म

## धम्म वाणी

**खत्तिया ब्राह्मणा वेस्सा सुद्दा चाण्डाल पुक्कुसा।**
**सब्बेवा सोरता दन्ता सब्बेवा परिनिब्बुता॥**

जातक २७|३७६.

वे सभी जो सुरत हैं, विनम्र हो सत्कर्मों में लगे हैं, सुदन्त है, आत्म-संयमका जीवन जीते हैं वे सभी निर्वाणके, मुक्ति-मोक्षके अधिकारी हैं, चाहे वे क्षत्रिय हों, ब्राह्मण हो, वैश्य हों, शूद्र हों, चाण्डाल हों या भंगी हों।

वादी कहे, निरात्मवादी कहे, ईश्वरवादी कहे, निरीश्वरवादी कहे, सगुण-साकारवादी कहे अथवा निर्गुण-निराकारवादी कहे तो भी विकारोंसे विकृत होकर व्याकुल होता ही है। यदि कोई व्यक्ति अपने आपको किसी एक सांप्रदायिक बाड़ेसे छुड़ाकर दूसरेमें, किसी एक दार्शनिक मान्यताके अखाड़ेसे छुड़ाकर दूसरे में बंधवा ले और ऐसा करते ही विकार-विमुक्त होकर दुःख-विमुक्त हो जाय, तब तो सचमुच ऐसे सांप्रदायिक बाड़ेको, ऐसे दार्शनिक अखाड़ेको अधिक से अधिक महत्व देना ही चाहिए। परन्तु ऐसा तो नहीं होता न ?

और इसके विपरीत कोई भी व्यक्ति शील-सदाचारका जीवन जीता है, समाधि द्वारा मनको वशमें करनेका अभ्यास करता है, प्रज्ञा द्वारा मनको विकार-विमुक्त करनेका अभ्यास करता है तो अपना कल्याण साधता ही है। कुदरत उसके रंग-रूप को, जाति-वर्णको, कर्मकांडको, संप्रदाय और दार्शनिक मान्यताको नहीं देखती। उसे दुःख-मुक्त करती ही है।

* * * *

जो व्यक्ति सचमुच सम्यक्-सम्बुद्ध बन जाता है (और सम्यक्-सम्बुद्ध बन जाना किसी एक अकेले व्यक्तिका एकाधिकार नहीं होता) वह कुदरतके कानूनको खूब अच्छी तरह जान लेता है। वह छिल्के व सारके अन्तरको बखूबी पहचान लेता है। इसीलिए छिल्कोंके प्रति आसक्त हुए लोगोंसे छिल्के छुड़वाकर अत्यंत करुणचित्तसे उन्हें सार ग्रहण करना सिखाता है। शुद्ध धर्म धारण करना सिखाता है जिससे उनका मंगल हो, कल्याण हो।

जब कुछ लोग उसकी सिखाई हुई इस सार्वजनीन विद्यामें निपुण हो जाते हैं तो प्रभूत मंगल मैत्रीसे उन्हें लोक-कल्याणके लिए आमुख करता है, प्रोत्साहित करता है, आदेश देता है।

" चरथ भिक्खवे चारिकं" जाएं, धर्मचारिका करें ! किसलिए ? अपने हित-सुखके लिए नहीं। बल्कि

"बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" अन्य अनेकों के हित-सुखके लिए !

"लोकानुकम्पाय" किसी संप्रदाय, जाति, वर्ण व वर्ग विशेषके लिए नहीं बल्कि सभी लोगों पर अनुकम्पा करनेके लिए !

"हिताय सुखाय देव-मनुस्सानं" भले-बुरे, सामान्य-विशेष, राजा-प्रजा, देव-मनुष्य सभीके मंगल-कल्याणके लिए, हित-सुखके लिए, स्वस्ति-मुक्तिके लिए धर्मचारिका करें। इस धर्मचारिकामें कहीं अपने लाभ-सत्कारकी किंचित मात्र भी कामना न हो ! केवल लोक-कल्याण ही लोक-कल्याणकी मंगल कामना।

"देसेथ भिक्खवे धम्मं" धर्मकी ही उपदेशना करें ! लोगोंको संप्रदाय अथवा दार्शनिक मत-मतांतरोंके बाड़ेमें न बांधे ! धर्म भी बुद्धि-किलोल करनेवाला नहीं, भावावेश जगानेवाला नहीं, बल्कि शुद्ध प्रयोगात्मक, क्रियात्मक जो कि दैनिक जीवन-व्यवहारमें उतारा जा सके। ऐसा सक्रिय धर्म जो कि,

"आदि कल्याणं" आरंभमें कल्याणकारी हो याने शील-पालनमें कल्याणकारी हो !

"मज्झे कल्याणं" मध्यमें कल्याणकारी हो याने समाधिके अभ्यासमें कल्याणकारी हो। और,

"परियोसान कल्याणं" अंतमें कल्याणकारी हो याने प्रज्ञा पुष्ट करनेमें कल्याणकारी हो।

कदम-कदम कल्याणकारी ही कल्याणकारी। ऐसा ऋजु राजपथ कि जिस पर उठाया हुआ एक भी कदम गलत नहीं होता। एक-एक कदम विकार-विमुक्तिके अंतिम लक्ष्यकी ओर ले जाता है। जिस पथ पर कदम वापस खैंचनेकी नौबत नहीं आती। जिसके अभ्यासमें किया गया किंचित् मात्र भी परिश्रम-प्रयास निरर्थक-निष्फल नहीं जाता।

ऐसा धर्म जो सुआख्यात हो।

"सात्थं सव्यंजनं" जिसका एक-एक शब्द अच्छी तरह समझाया गया हो। जो किसी महापुरुषकी वाणीका केवल रूढ़िजन्य तोता-रटंत पाठ न बन गया हो। अथवा केवल बुद्धि-विलास और वाणी-विलासका विषय न बन गया हो। दार्शनिकोंका भ्रामक शब्दजाल न बन गया हो। जिसकी अभिव्यंजना स्पष्ट हो, सार्थक हो। ताकि लोग उसे समझकर धारण कर सकें और अपना सही अर्थ सिद्ध कर सकें।

" केवलं परिपुन्नं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेथ" ऐसा ब्रह्माचरण, ऐसा धर्माचरण प्रकाशित करें जो संपूर्णतया परिपूर्ण हो याने जिसमें कोई कमी न हो, जिसमें कुछ और जोड़नेकी किंचित मात्र भी गुंजाइश न हो। जो पूर्णतया परीशुद्ध हो याने जिसमेंसे अशुद्ध मानकर किंचित् मात्र भी निकाल बाहर करनेकी गुंजाइश न हो। शील, समाधि और प्रज्ञाके ऐसे परिपूर्ण परिशुद्ध व्यावहारिक धर्ममें से कुछ निकाला कि उसकी परिपूर्णतामें कमी आ जायेगी। कुछ जोड़ा कि उसकी परिशुद्धतामें कमी आ जायेगी। ऐसे सांप्रदायिकता-विहीन सर्वलोकहितकारी सार्वजनीन धर्म के प्रकाशनकी प्रेरणा दी गयी। धर्म जो धारण किया जाय। धर्म जो आचरणमें उतारा जाय। केवल सैद्धान्तिक मान्यता तक सीमित न रह जाय। शीलकी कोरी चर्चा नहीं। शील जीवनमें उतरे। समाधिका कोरा विवरण नहीं। समाधि चित्तका अंग बने। प्रज्ञाकी कोरी व्याख्या नहीं। प्रज्ञा अन्तरमें स्थित हो, वस्तुतः स्थितप्रज्ञ बनाए। धर्म धारण किया जाय तो ही उसकी परिपूर्णता। धर्म आचरणमें उतरकर मानसको परम परिशुद्ध कर दे तो ही उसकी परिशुद्धता। इस प्रेरणाके आधार पर सरल-हृदय करुणचित्त संत पुरुष केवल लोकहितके लिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी निर्मल धर्मका प्रज्ञापन-प्रकाशन करते रहे और जन-जनका कल्याण करते रहे। जब-जब जनहित की इस विमल चेतनासे धर्म सिखाया जाता है, तब-तब धर्म निर्मल रहता है और अपरिमित लोक-कल्याण करता है।

* * * *

लेकिन संप्रदायको ही धर्म समझ बैठनेवाला कोई उलझा हुआ व्यक्ति जब लोक-कल्याण के इस निर्मल उद्देश्यको नहीं समझता और अपने संकुचित स्वार्थमें गिरफ्त हो जाता है तो धर्म-शिक्षाके नाम पर संप्रदायका बाड़ा बांधने लगता है और सारा जीवन गड़रियेका काम करता है। इस बाड़ेके लोग भेड़-बकरीकी तरह मेरा अंधानुकरण करते रहें। इस बाड़ेमें बंधी भेड़-बकरियां कहीं मनुष्योंकी तरह स्वतंत्र चिंतन-मनन न करने लगें। इनकी संख्या बढ़ती रहे। अन्य भेड़-बकरियां अपने बाड़ोंको तोड़कर इस बाड़ेमें अवश्य आ जांय परंतु एक भी भेड़-बकरी कहीं इस बाड़ेके बाहर न चली जाय। बेचारा धर्म-शिक्षक(!)

कहाँ उलझ गया! अपना भी अनमोल मानवी-जीवन ऐसे निकम्मे काममें बिताने लगा और अन्य अनेकोंका भी अनमोल जीवन नष्ट करनेमें लग गया। हर संप्रदायवादी अपने बावलेपनमें यही करता है।

इसी प्रकार जात-पांतको धर्म माननेवाला भटका हुआ कोई व्यक्ति जब धर्मकी शिक्षा देता है तो लोगोंको उलझाता ही है। धर्मके नाम पर मनुष्य द्वारा मनुष्यके निर्मम शोषण किए जानेको बढ़ावा देता है और धर्मकी निर्मलता नष्ट कर लोगोंका असीम अहित करता है।

इसी प्रकार किसी दार्शनिक मान्यताके बोझ से बोझिल व्यक्ति धर्मके व्यावहारिक पक्षको भूलकर एक दार्शनिक अखाड़ा स्थापित करनेमें लग जाता है। अपनी दार्शनिक मान्यताको सत्य तथा औरोंकी दार्शनिक मान्यताको मिथ्या सिद्ध करनेके लिए कितना श्रम करता है! कितना तर्क-वितर्क! कितना वाद-विवाद! कितना खिंचाव-तनाव! कितना संघर्ष-संग्राम! जीवन-व्यवहारमें धर्म उतरे या न उतरे, पर मेरी दार्शनिक मान्यता लोगों द्वारा स्वीकार्य हो जाय, सारा जीवन इसी में लगा देता है। अनमोल मानवी जीवनका कैसा दुरुपयोग! स्वयं भी उलझा रहता है, औरोंको भी उलझानेका ही काम करता है।

इसी प्रकार कर्मकांडों में उलझा हुआ व्यक्ति धर्मके नाम पर नाना प्रकारके कर्म कांडोंको बढ़ावा देने लगता है। उसके लिए छिलके ही प्रमुख बन जाते हैं। धर्मका सार भले छूट जाय। इस प्रकार स्वयं भी डूबता है, अपने अनुयायियोंको भी ले डूबता है।

साधको! हमारा बड़ा भाग्य है। बड़ा पुण्यलाभ है जो कि धर्मका निर्मल स्वरूप हमारे सामने प्रकाशित हुआ। छिले हुए शंखकी तरह विरज, खिले हुए कमलकी तरह विमल, जिस पर कहीं कोई मैल नहीं टिक सकता। आओ, सभी सांप्रदायिक बेड़ियोंको, जात-पांतकी जंजीरोंको, दार्शनिक मान्यताओंकी जकड़नको, निष्प्राण कर्म-कांडोंके शिकंजोंको तोड़कर विरज-विमल धर्म धारण करें और अपना कल्याण साधें, मंगल साधें, स्वस्ति-मुक्ति साधें!

कल्याण मित्र,
स. ना. गो.

## संपर्क सूत्र

१) **बोधगया**- व्यवस्थापक,
बर्मी बौद्ध विहार, पो. बोधगया, जिला गया (बिहार)

२) **जयपुर**- श्री श्यामसुन्दर मूंदड़ा
C/o. श्याम कारपोरेशन, रामललाजीका रास्ता,
मुनोत निवास, जौहरी बाजार, जयपुर-३०२ ००१.
फोन : ६५४१४/६३३२२

३) **हैदराबाद**- १) श्रीमती ऊषाबेन पी. मेहता, श्रीनगर कॉलोनी,
हैदराबाद-५०० ८७३. फोन : ३०२९१ अथवा
२) श्री पूरनमल अग्रवाल, द्वारा होटल राजधानी,
सिद्दिअम्बर बाजार, हैदराबाद-५०० ०१२.
फोन : ५७५७१.

४) **इगतपुरी**- व्यवस्थापक, विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि,
इगतपुरी-४२२ ४०३. फोन : इगतपुरी ७६.

## इगतपुरी में स्वयं-शिविर

स्वयं शि. क्र. १०९ दि. १-२-८२ से १२-२-८३ तक
,, ,, ११० दि. १२-२-८३ से २३-२-८३ तक

# विपश्यना-शुल्क

हिसाबकी सुविधाके लिए 'विपश्यना' पत्रिकाका वार्षिक शुल्क-वर्ष जनवरी से दिसम्बर तकका निश्चित किया हुआ है। कागज, छपाई एवं व्यवस्था आदिके बढ़े हुए खर्चों को ध्यानमें रखकर इसके शुल्क-वृद्धिका निर्णय किया गया है। जनवरी १९८३ से **वार्षिक शुल्क रुपए १०/- एवं आजीवन सदस्यता शुल्क रुपए १००/- होंगे**। और इसी प्रकार मंगल कामना के विज्ञापनका भी **आधे पृष्ठका रुपए १०००/- एवं पाव पृष्ठका रुपए ५००/-** करना पड़ रहा है। विश्वास है हमारी कठिनाइयोंको ध्यानमें रखकर साधक इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे।

वार्षिक-शुल्क देनेवालोंका शुल्क इस अंकके साथ समाप्त हो गया। आगामी वर्ष के लिए वे अपना शुल्क नई दरके अनुसार नीचे लिखे पते पर इगतपुरी ही भेजें। संपादकके पते पर बम्बई कदापि न भेजें क्योंकि बहुधा संपादकके वहाँ न रहने पर मनीआर्डर स्वीकार करनेमें कठिनाई होती है।

पता - व्यवस्थापक
**विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि.**
**इगतपुरी-४२२ ४०३.**

शुल्क भेजते समय इस बातका ध्यान रखें कि मनीआर्डर पर आपकी साधक/ग्राहक संख्या अवश्य लिखी होनी चाहिए। अन्यथा 'असाधक' समझकर आपका म. आ. वापस लौटा दिया जायेगा।

फिलहाल केवल 'विपश्यी साधकों' को ही पत्रिका भेजने की व्यवस्था है। इसलिए जो कभी किसी शिविरमें सम्मिलित न हुए हों, वे अपना शुल्क भेजनेका आग्रह न करें।

ऐसा कोई साधक जिसे पत्रिका न जाती हो और उसे अपनी ग्राहक-संख्या भी न मालूम हो तो पहली बार जब विपश्यनाके शिविरमें बैठे थे उसका विवरण याने शिविर-क्रमांक अथवा उसका स्थान व तारीखें लिख भेजने पर हम मालूम कर लेंगे और पत्रिका भेजी जा सकेगी। पत्रिका पर चिपकाए पते पर उनकी ग्राहक-संख्या छपी होगी।

जिन्हें सुविधा हो वे १००/- रुपए एक साथ भेजकर आजीवन ग्राहक बन सकते हैं।

जो पुराने आजीवन ग्राहक साधक बढ़े हुए शुल्ककी राशि भेजकर धर्म-प्रकाशनमें शुद्ध धर्म-चेतनासे सहायक होना चाहें, वे पुण्यलाभ ले सकते हैं।

व्यवस्थापक

## भावी-शिविर

| शि. क्र. | स्थान | दिनांक से तक |
|---|---|---|
| २२६ | हैदराबाद | ३-२-८३ से १४-२-८३ (हिंदी) |
| ● लघु शिविर | हैदराबाद | १४-२-८३ से २१-२-८३ |

● (केवल पुराने साधकों के लिए) इसमें पूज्य गुरुजी सतिपट्ठान सुत्त की व्याख्या करेंगे।

| २२७ | इगतपुरी | १२-३-८३ से २३-३-८३ तक (हिन्दी) |
|---|---|---|

## भारत में स. आचार्योंके शिविर

| क्र. | स्थान | दिनांक से तक | | संचालक |
|---|---|---|---|---|
| JB-२ | बोधगया | २२-१-८३ से ३-२-८३ तक | (अंग्रेजी) | मि. [illegible] |
| LN-५ | जयपुर | ३०-१-८३ से १०-२-८३ तक | (हिन्दी) | श्री क. ला. राठी |
| NH-८ | इगतपुरी | १-३-८३ से १२-३-८३ | ,, ,, | श्री न. पारिख |
| NH-९ | ,, | १-४-८३ से १२-४-८३ | ,, ,, | ,, ,, |

संपर्क : (कृपया पृष्ठ ३ पर देखें)

**सूचना :** १) कृपया साधना शिविर में शामिल होने से पूर्व शिविर-व्यवस्थापक के पास अपना नाम रजिस्टर करा लें। किसी कारणवश शिविर में सम्मिलित न हो सकते हों तो पर्याप्त समय रहते सूचित करें ताकि किसी अन्य प्रत्याशी को स्वीकृति दी जा सके। २) अंग्रेजी शिविर में हिन्दी-प्रवचन सुनने के लिए हिन्दी-टेप की सुविधा उपलब्ध रहती है। ३) शिविरों के नियम कड़े होते हैं। उनका कड़ाई से पालन कर सकें तो ही भाग लेना चाहिए।

---

एक शुभेच्छु
की मंगल कामनाओं सहित
↓

## दूहा धरम रा

धरम न समझ्यो बावळो, दरसन मद मगरूर।
दरसन ही परमुख बण्यो, रह्यो धरम सूं दूर॥
सम्प्रदाय री बेड़ियां, दरसन रा जंजाल।
किसो'क बंधग्यो बावळो! हुयो हाल बेहाल॥
पीकर होग्यो बावळो, दरसन-मत री भंग।
ऐनक जिसो चढ़ा लियो, दिखै बिसो ही रंग॥
करम कांड मँह उलझग्यो बढग्यो भव संसार।
काची माटी को घड़ो, पुगै न परलै पार॥
सम्प्रदाय अर धरम मँह, जो समझै ना फर्क।
बो भोळो, सत् धरम रो, बेड़ो करसी गर्क॥
जात, बरण को गोत को, जरा भेद ना होय।
जो सैं को मंगल करै, धरम सांचलो सोय॥

## दोहे धर्म के

जब परहित सेवा करे, धर्म-सुमन खिल जाय।
जब निजहित सेवा करे, धर्म-सुमन मुरझाय॥
जब जब मनुज समाज में, जातिवाद बढ़ जाय।
तब तब मंगल धरम के, सुमन सभी कुम्हलायँ॥
जिसके सिर पर चढ़ गया, सम्प्रदाय का भूत।
करे धर्म के नाम पर, काली ही करतूत॥
जहाँ जाति का, वर्ण का, जहाँ गोत्र का नाज।
धरम न टिक पाए वहाँ, अहंकार का राज॥
कर्मकांड के बोझ का, चढ़ा शीश पर भार।
छिलके ही संग्रह किए, छुटा धरम का सार॥
शुद्ध धरम जग में जगे, हो जन जन खुशहाल।
सम्प्रदाय जब प्रमुख हो, हो जन जन बदहाल॥

---

सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक : रामप्रताप यादव, ग्रीन हाउस, २ री मंजिल, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, बंबई-२३. टेलीफोन : ३१३५१०. ● मुद्रण स्थान : अक्षरचित्र मुद्रणालय, सातपूर, नासिक-४२२ ००७. टेलिफोन : ८८२५१. ● पत्रिका में विज्ञापन दर : आधा पृष्ठ रु. १०००/-, चौथाई पृष्ठ रु. ५००/- ● वार्षिक शुल्क रु. १०/-, आजीवन शुल्क रु. १००/-

---

"विपश्यना" 12/82

पो. रजि. नं (M) NS (C) 36

Licence No. NS 18
Licensed to post without pre-payment

प्रेषक :
सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट
विपश्यना विश्व विद्यापीठ
धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२ ४०३.
(नासिक, महाराष्ट्र)

To